बी.ए. प्रथम– वर्ष

हिन्दी साहित्य

प्रथम प्रश्न पत्र – प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य

समय: 3 घंटे उत्तीर्णांक– 36 पूर्णांक – 100

इकाई – 1.

(1) पद्मावत्ती समय – पृथ्वीराज रासो संपादक : प्रोफेसर भारतभूषण 'सरोज' एवं डॉ. ओमप्रकाश सिंघल ; प्रकाशक – हिंदी साहित्य संसार , नयी सडक– दिल्ली

1. मनहुँ कला ससिभान , कला सोलह सो बन्निय

2. कुटिल केश सुदेष ,पौह परचियत पिक्कूसद

3. सोधी जुगति कौ, कंत कियो तब चित चहौं दिस ।

4. प्रिय प्रथिराज नरेस, जोग लिषि कग्गर दिन्नो ।

5. उह घरी पलनि उहै दिनावैर उहै सजि ।

6. सुन गज्जनै अवाज, चढ़यो साहाबदीन बर ।

7. बाज्जिय घोर निसाँन , राँन चौहान चहों दिसि ।

8. निकट नगर जब जान, जाय वर बिंद उभय भय ।

9. भई जु आनि अवाजं, आप साहाबदीन सुर ।

10. ना को हार नह जित, रहेइ न रहिए सूखर ।

(2). ढोला मारु का दूहा – संपादकः नरोत्तम दास स्वामी, सूर्यप्रकाश पारीक ,रामसिंह (मरुधर परिचय)

1. देस विरंगउ ढोलणा, दुखी हुअया ईहां आई

2. करहा देस सुहामणउ ,जे मू सासरवाडि

3. करहा, लंब कराडिआ , बे –बे अंगुल कन्न

4. बालऊँ, बाबा देसड़उ ,पाँणी जिहौं कुबाँह

5. बालऊँ , बाबा देसड़उ ,पाँणी संदी ताती

6. बाबा ,न देइस मारुबाँ सूधा एकालाँह

7. बाबा म देइस मारुबाँ, बर कूँआरी रहेसि ।

8. मारु ,थांकई देसड़इ ,एक न भाजइ रिद्र

9. जिण भुई पन्नग पियणा, कयर कंटाळा रुँख

10. पहिरण ओढ़न कंवळा ,साठे पुरिसे नीर ।

(3) विद्यापति भनई विद्यापति – संपादकः कृष्ण मोहन झा

जय जय संकर, जय जय त्रिपुरारि, नंदक नंदन कदंबक तरु–तर,

देख–देख राधा रूप अपार, आज पेखल नंद – किशोर ,

सजनी कानुक के कहब बुझाई

(4) अमीर खुसरो – दोहे

अपनी छवि, आ साजन मोरे नयन में खुसरो रैन सुहाग की, गोरी सोवे सेज पर , खुसरो दरिया प्रेम का

मुकरियाः

आप हिले और मोहे हिलाए , ऊंची अटारी पलंग बिछायो

लिपट लिपट वाके सोई, सेज पड़ी मोरे आंखो आए

शोभा सदा बढ़ावन हारा

गीतः

छाप तिलक सब छीनी, जब यार देखा नैनभर,

सकल बन फूल रही सरसों

इकाई –2

(5) कबीर कविताई –संपादकः पुरूषोत्तम अग्रवाल

अकथ कहानी प्रेम की

1. आपा मेट्या हरि मिलै ,हरी मेट्यां सब जाई ।

2. कबीर बादल प्रेम का, हम पर बरस्या आई ।

3. पंजरि प्रेम प्रकासिया ,अंतरि भया उजास ।

4. जिहि घटि प्रीति न प्रेम रस ,फुनि रसना नहीं राम ।

5. हरी के नाउँ सूं , प्रीति रहे इकसार ।

6. काम मिलावे राम कूं , जे कोई जाणे–राषि ।

7. पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुवा, पंडित भया न कोई ।

8. कबीर यहु घर प्रेम का , खाला का घर नाहीं ।

9. निज घर प्रेम का , मारग अगम अगाध ।

10. प्रेम न खेतौं नीपजै, प्रेम न हाटि बिकाइ ।

11. कमोदनी जलहरि बसे, चंदा बसै अकासि ।

12. जो है जाका भावता, जदि तदि मिलसी आई ।

मौखिक परंपरा के कुछ पद ' शब्दावली ' से

1. झीनी झीनी बीनी चदरिया ।

2. संतो शब्द साधना कीजै ।

3. मोको कहाँ ढूँढे बन्दे, मैं तो तेरे पास में ।

4. रहना नहीं देस बिराना है ।

5. मन मस्त हुआ फिर क्यों बोलै ।

(6) जायसी – संपादक : डॉ. श्रीनिवास शर्मा (सिंघलद्वीप खंड)

1. सिंघल दीप कथा अब गावौ । ओ सो पदुमनि बरनि सुनावौ ॥

2. मानसरोदक देखिअ काहा । भरा समुंद अस अति अवगाहा ॥

3. पानि भरई आवहिं पनिहारी । रूप सुरूप पदुमिनी नारी ॥

4. आस पास बहु अमृत बारी । फरी अपूर होई रखवारि ।।

5. पुनि फुलवारि लागि चहुँ पासा । बिरिख बेधि चन्दन भै बासा ।।

6. पुनि आईअ सिंघल गढ़ पासा । का बरनौ जस लाग अकासा ।।

7. नवौं पौरि पर दसौ दुआरु । तेहि पर बाज राज घरिआरू ।।

8. पुनि बांधे रजबार तुरंगा । का भरनौ जस उन्हके रंगा ।।

9. मुकुट बंध सब बैठे राजा । दर निशान नित जिन्हे के बाजा ।।

10. बरनौ राज मंदिर रनिवासु । अछरिन्ह भरा जानु कविलासू ।।

(7) विनय पत्रिकाः तुलसीदास , संपादक : वियोगी हरि (विनय पत्रिका)

राम जपु, राम जपु, राम जपु बावरे, ऐसी मूढ़ता या मन की, केसव ! कहि न जाई का कहिये

जो निज मन परिहरै विकारा, विश्वास एक राम को, ऐसा को उदार जग माहिं, कबहुंक हौं यहि रहनि रहौंगो

(8) सूर सौरभः नंद किशोर आचार्य

अविगत–गति कछु कहत न आवै, मेरौ मन अनत कहाँ सुख पावै, तजौ मन हरि बिमुखनि को संग

मैया, मैं तो चंद खिलौना लैहों, उपमा नैन न एक गहि, निर्गुण कौन देस को बासी ?

इकाई – 3

(9) मीराः शंभूसिंह मनोहर

मन रे परसि हरि चरण, बसो मेरे नयनन में नंदलाल,

तनक हरि चितवौ जी मोरी ओर,

आलि रै मेरे नयन बान पड़ी, मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरो न कोई

मैं तो सांवरे के संग राची, मैं तो गिरधर के घर जाऊँ, माई री मैं तो लियो गोविंदो मोल

राणाजी थे जहर दियौ म्है जाणी, सांप पिटारा राणाजी भेज्या

(10) रहीमः रहीम ग्रंथावली , संपादक : श्री विद्यानिवास मिश्र, श्री गोविंद रजनीश

अमर बेलि बिनु मूल की, अमृत ऐस वचन में, अरज गरज मानै नहीं, असमय परै रहीम कहि, आन घटै नरेस ढिंग, आप न काहू काम के, आवत काज रहीम कहि, उरग, तुरंग, नारी नृपति, ऊगत जाहि किरण सो

एक उदर दो चोंच हैं, एकै साधै सब सधै,

ए रहीम दर–दर फिरहि, ओछो काम बड़े करै,

अंजन दिया तो किरकिरी, अंड न बौड़ रहीम कहि,

कदली सीप भुजंग मुख, कमला थिर न रहीम कहि,

करत न निपुनई गुन बिना, करमहीन रहिमन लखो, कहि रहीम इक दीप तें

(11) रसखानः रसखान ग्रंथावली, संपादकः विद्यानिवास मिश्र

मानुष हौं तो वही रसखान, या लकुटी अर कामरिया पर, मोरपंखा सिर ऊपर राखो, एक समै मुरली धुनि मैं, गावे गुनी गुनिका गंधर्व, खेलत फाग सुहाग भरि, कान्हा भए बस बांसुरी कै, कहा कहूं सजनी संग की रजनी, कौन ठगौरी, आज गई हुति भोरहिं

(12) रैदास – रैदासबानी संपादकः शुकदेव सिंह

1. अब कैसे छूटै राम रट लागी ।

2. ऐसी लाज तुझ बिनु कौन करै ।

3. गोविन्दे भवजल व्याधि अपारा तामे सूझे वार न पारा ।

4. जब हम होते तब तूं नांहि, अब तू ही मैं नाहीं ।

5. देवा हम न पाप करंत अनन्ता, पतित पावन तेरा बिड़द कस हुंता ।

6. हौं बनिजारो राम को, हरी को टांडो लादै जाइ रे ।

परीक्षकों के लिए निर्देशः–

1. प्रश्न–पत्र तीन खंडों क्रमशः अ, ब, और स में विभक्त होगा।
2. खंड अ में प्रत्येक इकाई से अधिकतम 2 प्रश्न रखते हुए सभी 5 इकाइयों से कुल 10 लघुत्तरात्मक प्रश्न अनिवार्यतः पूछे जाएंगे।
3. खंड ब में प्रथम 3 इकाइयों में से व्याख्या संबंधी कुल 7 व्याख्या प्रश्न पूछे जाएंगे, जिनमें से विद्यार्थी को किन्हीं 5 व्याख्याओं को अनिवार्य रूप से हल करना होगा।
4. खंड स में पांचों इकाइयों में से 4 आलोचनात्मक और विश्लेषणात्मक प्रश्न पूछे जाएंगे, जिनमें से विद्यार्थियों को 2 प्रश्न अनिवार्य रूप से हल करने होंगे।